एकांत

सुष्मिता बारीक

उन दिनों की बात है जब मैं विश्वविद्यालय में बी.ए. की पढ़ाई कर रही थी। घर की आर्थिक स्थिति थोड़ी कमजोर होने के कारण कॉलेज पढ़ने के साथ-साथ ट्यूशन पढ़ाती थी, इसमें घर के आस-पास मोहल्ले के छोटे-छोटे बच्चे आया करते थे। सभी बच्चो की उम्र लगभग 5-6 साल तक की ही होगी। उन बच्चों को पढ़ाने के साथ-साथ अक्सर उनके साथ मस्ती मज़ाक शरारते होती रहती थी।

मानों मैं खुद ही बच्ची बन जाती थी। हर दिन की तरह आज भी शाम के 5 बज गए थे। एक-एक करके सारे बच्चे आने लगे। आज पिंटू अपनी मम्मी के साथ आया, वे मुझे आवाज लगाती हैं, मैंने कहा बोलिए कैसे आना हुआ, बोलती है कि "हमारे घर के बगल में जो नीले रंग का किराया वाला मकान है न वहां एक नए परिवार आया है, वो अपने बच्चे के लिए ट्यूशन ढूंढ रहे है मैंने तेरा नाम बताया है, अच्छा तो फिर जाके मिल आना।" मैंने धीरे से बोला "जी ठीक हैं। अगले दिन कॉलेज से आते समय याद आया की एक बच्चे के घर जाना था। फिर समय मिलेगा या नहीं जाके मिल आती हूं।

यही है वो नीले रंग का मकान मैं दरवाजे पे पहुंचकर मैंने दरवाजा खटखटाया, कुछ समय बाद एक बुजुर्ग महिला निकलती हैं उन्होंने कहा कौन मैंने कहा "नमस्ते दादी जी। मैं ट्यूशन पढ़ाती हूं। मुझे शारदा आंटी जी ने आपसे मिलने को कहा था।" "अच्छा" हां बेटा हमने उन्हें पूछा था। ट्यूशन भेजने के बारे में उन्होंने आपका नाम बताया। आओ अंदर आओ। वो पहली 6 साल का है और 1 कक्षा में पढ़ रहा है, मुझे बहुत परेशान करता हैं लेकिन "मेरे गले का हार है मेरा बच्चा" उनकी बातों से ऐसा लग रहा था कि वो बच्चे से बहुत प्यार करती हैं, अंदर से एक और महिला निकली। मैंने सोचा वह बच्चे की मां हैं। मैंने उन्हें नमस्ते किया। उन्होंने कहा "बहुत परेशान करता है।" मेरे से पढ़ता ही नहीं हैं। एक तो डरा के

सुष्मिता बारीक हिन्दी विभाग, गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर में बी.ए. अंतिम वर्ष की छात्रा है।

ज्यादा चिल्ला के या थोड़ा मार के भी नहीं पढ़ा सकती। मैंने कहां क्यों आपका बच्चा हैं प्यार के साथ-साथ थोड़ा सख्ती दिखानी चाहिए।

उन्होंने कहा नहीं, नहीं। मैं उसकी चाची हूं, "ये मेरा बच्चा नहीं हैं", मैं आश्चर्यचकित हो गई।

मैंने धीमें स्वर में पूछा, तो फिर ? दादी जी ने कहा इसकी मां इसे छोड़कर चली गई जब वो 3 साल का था। दोनों पति-पत्नी के बीच लड़ाई हुआ। और वो चली गई। इस बच्चे को छोड़ के और इसके पापा फैक्ट्री में काम करते हैं। उसका काम में ही आधा दिन निकल जाता हैं, फिर बच्चे का ख्याल कब रखेगा। मेरे छोटे बेटे की नौकरी यहां हैं और बहु भी यही रहती हैं और वो पेट से हैं ,तो उसका ख्याल रखने के लिए यहां मैं आई तो इस बच्चे को वहां कैसे छोड़ देती कैसे रहता। ये सब कहते हुए उनके आंख भर आए। मैंने कहां चिंता मत किजिए सब ठीक हों जायेगा। आप सही किए बच्चे को ले आए। यहां चाचा-चाची और आपके साथ रहेगा तो बच्चे में अकेलापन भी नहीं रहेगा। वैसे क्या नाम हैं बच्चे का, उसका- एकांत।

चाची जी ने कहा, मैं बुला लाती हूं अंदर में हैं टीवी देख रहा हैं, मैंने कहाँ, मुझे भी उससे मिलने का बड़ा मन हैं। चाची ने कहा देखो- एकांत, ये तुम्हारी नई मैडम है अब ये तुम्हें ट्यूशन पढ़ाएगी। नमस्ते बोलो- उसकी ओझल आँखें मुझे मासूम नजरों से देखने लगे, बोला कुछ भी नहीं।

मैंने कहा ये तो बिल्कुल शांत बच्चा लग रहा हैं, दादी ने कहा- शांत तो हैं, लेकिन खाने-पीने, नहाने और पढ़ने में घर पर बहुत परेशान करता है, अब मेरी तो उम्र हो गई हैं और इसकी चाची तो पेट से हैं अब इसके पीछे-पीछे कौन दौड़ेगा ! जिस उम्र में मां-बाप का प्यार, उनका साथ मिलना था, बेचारा अभागा हैं। जितना हो सके उसके लिए कर रही हूं। अब भगवान की जैसी इच्छा।

फिर चाची जी अंदर से चाय की प्याली लिए आती हैं- लीजिए। मैने कहा नहीं लगेगा मैं वैसे भी चाय नहीं पीती, और मुझे देर भी हो गई हैं, काफी समय हो गए यहां आए, मुझे अब चलना चाहिए। उन्होंने कहा- फिर कल से भेजते हैं ट्यूशन। 'हां ठीक है' मैंने कहा।

दूसरे दिन एकांत ट्यूशन पढ़ने आया, वो बहुत घबराया हुआ, डरा हुआ लग रहा था। मैंने पूछा क्या नाम है, वो चुप था। कुछ समय तक मैं भी चुप रहीं फिर मैंने बोला शायद तुम्हारा नाम एकांत हैं कल तुम्हारी दादी ने बताया था। वो सिर हिला कर, हामी भरा। फिर मैंने पूछा कौन से क्लॉस में पढ़ते हो, वो एक ऊंगली उठाकर इशारा करके बताया। क्लॉस 1 मैंने कहां- मुंह में कुछ रखा हुआ हैं शायद तभी मुंहनहीं खोल रहा, वो मुंह ऊपर करके फिर थोड़ा मुस्कुराया। लेकिन कुछ बोला नहीं, मैंने किसी तरह उससे जानने बात करने की कोशिश की, शुरुआती कुछ दिन मैंने एकांत को समझने की कोशिश की उसके शांत, गुमशुम से चहरे को पढ़ने की कोशिश की वह सारे बच्चों से अलग था, पढ़ने में बहुत कोमज़ोर था, जाहीर सी बात है, बच्चे को जिस समय पढ़ाने या समझाने के लिए मां-बाप की जरूरत थी। वो अपने आपसी झगड़े के कारण अपने बच्चे की तरफ जो जिम्मेदारी से मुंह मोड़ लेते हैं, जिससे बच्चे के जीवन में बहुत बुरा असर पड़ रहा था।

ट्यूशन खत्म हो चुका था, मैं एकांत को बोली क्या घर जाना है, उसने धीमें स्वर में कहा– हां दादी इंतजार कर रही होगी। शायद दोनों के बीच में बहुत ज्यादा लगाव और प्यार था, मैं गेट तक छोड़ने गई, उसे दूर खड़ी हुई उसकी दादी दिखाई देने लगती हैं और बोलता हैं वो देखो बोला था न दादी मेरा इंतजार कर रही होगी। मैं हस पड़ी। और वो मुझे टा-टा करते दौड़ते हुए चल दिया। मैंने मन ही मन सोचा चलो जाते समय तो कम से कम मुस्कुराया।

यैसे ही एकांत रोज ट्यूशन आने लगा, अब वो मुझसे खुल मिल चुका था, वो मुझसे बातें भी करने लगा था, बातों ही बातों में मैंने पूछा-एकांत तुझे मम्मी की याद नहीं आती, उसने कहा-नहीं, मैंने कहा की मम्मी अच्छी हैं या फिर चाची। उसने कहा- दोनों, मैंने कहां कोई एक, उसने कहा- दादी, मैं हस पड़ी, फिर मैंने पूछा और पापा ? उसने कहा- वो भी बहुत अच्छे हैं। मेरे लिए खिलौना लाते और पैसा देते और घुमाने लेते और रोज फोन करते हैं। यूंही आपने पापा की तारीफो के फुल बांधने लगा। मैंने कहा बस-बस अब पढ़ाई करते हैं, अब वो धीरे-धीरे पढ़ने लिखने लगा था, लेकीन घर में उसके पढ़ाई पे ध्यान देने वाला कोई नहीं था, काश दादी थोड़ा पढ़ी लिखी होती।

अब 7 महीने से ज्यादा हो चुके थे एकांत को ट्यूशन आते। एक– दो दिन से वो होमवर्क नहीं कर रहा था। मैं थोड़ा सख्ती दिखाई बोली-ये सब रोज-रोज नहीं चलेगा, मार पड़ेगा अब से नहीं किया तो, वैसे क्यू नहीं किया। 2-3 दिन हो गया। होमवर्क नहीं कर रहा, बता क्यों नहीं किया, उसने कहा 'घर में लड़ाई होता हैं' मैं भी रोता और दादी भी।

मैं सहम गई- 'लड़ाई क्यों? कौन करता हैं? और किसलिए?' अच्छा रुको मैंने सारे बच्चों को छुट्टी दे दिया। और एकांत को अकेले रोक लिया, अब बताओ क्या हुआ- पता नहीं चाचा रोज दारु पी के आते हैं और दादी को गाली देते हैं ,और दादी से लड़ाई करते हैं और चले जा बैग लेके बोलते हैं वो बहुत

जोर जोर से चिल्लाते हैं कान फट जाता हैं और दादी रोती हैं तो मुझे भी रोना आता हैं। उसकी बातों से मैं दंग रह गई थीं। एक 6 साल के बच्चे के मुंह से ये सब बात सुनकर मेरा दिल दहल गया और वो भी इतनी समझदारी से बताना। मैंने एकांत को कहां तुम रोया मत करो बच्चा- तुम रोओगे तो दादी भी रोएगी न, सही में- "तो क्या दादी को रोते देख तुम रोते हो न तो दादी तुम्हें रोते देख नहीं रोएगी क्या" एकांत बहुत ही समझदार था।

वह आपनी मासूम ओझल आंखो से मेरी तरफ़ देखा, फिर मैंने कहां चलो ठीक है आज नहीं मारती लेकीन होमवर्क करना अब मत भूलना। उस दिन के बाद कुछ 3,4 दिन तक वो ट्यूशन नहीं आया, मेरा मन घबराने लगा। सोची एक बार घर जाऊं फिर सोचती क्या सही होगा जाना, जैसे-तैसे मैं हिम्मत करके गई, मैंने दरवाजा खटखटाया- ये शायद एकांत के चाचा थे। आप कौन ? मैं एकांत की ट्यूशन मैडम हूं। मुझे मिलना हैं एकांत से। वो कुछ दिनो से नहीं आ रहा हैं। वो ठीक तो है न। उन्होंने कहां वो यहां नहीं हैं। मैंने हड़बड़ाते हुए कहां–तो फिर कहाँ हैं ? अच्छा, तो फिर दादी जी से एक बार मेरी बात करा दीजिए, उन्होंने कहां-अभी कोई नहीं हैं वो सब अस्पताल गए हुए हैं, मेरी बेटी हुई हैं तो मेरी पत्नी अस्पताल में भर्ती हैं तो मां वही हैं तो एकांत भी वहीं गया है। मेरा मन स्थिर हो गया। मैं वहां से लौट गई।

फिर एकांत कुछ दिन बाद ट्यूशन आता है। मैंने कहा- क्यों इतने दिन से कहां था ? और बता के भी नहीं गया था। आपको कुछ नहीं पता क्या? क्या पता तू बताएगा तो मैं जानूगी ना। मेरी चाची की न बेटी हुई है। मैं न बड़ा भाई हूं उसके साथ अभी खेल के आ रहा हूं। अच्छा बहुत हो गया। खेलना अब चल पढ़ना पेपर हैं न और बहुत छुट्टी भी मार लिया है, अब बहुत पढ़ना पड़ेगा अब तुझे पेपर में अच्छे नंबर से पास होना हैं न तुझे फिर क्लॉस 2 में जाना हैं, फिर उसने कहा- नहीं, नहीं पेपर के बाद पापा के पास जाऊंगा, मेंरी नई मम्मी आने वाली हैं। उसकी बातों से मेरे चेहरे के रंग उड़ गए थे, मैंने कहा — नई मम्मी, किसने कहा- "दादी और पापा" और वो बहुत अच्छी हैं मुझे कभी छोड़कर नहीं जाएगी। उस नादान बच्चे के मन में पता नहीं कितना, दुःख, दर्द आकेलापन होगा, धीरे-धीरे समय बीतता जाता हैं और एकांत का परीक्षा खतम हो जाता हैं, वो अच्छे नंबर से पास भी होता हैं। और एक दिन एकांत और दादी दोनों वापस चले जाते हैं एकांत जाते समय बहुत खुश लग रहा था। उसे नई मम्मी जो मिलने वाली थी, मैने उसे अपना फोन नंबर भी दिया, लेकीन फोन कभी आया नहीं, पता नहीं क्या उसकी नई मम्मी उसको वो प्यार, ममता दे पायेगी जैसी देना चाहिए। मेरे मन में कई तरह के सवाल उठने लगे। बस मन एक ही बात बोल रहा था। ये भगवान जैसे भी करके इस मासूम बच्चे की जिदंगी मत बिगाड़ना। एकांत को गए हुए 3 साल हो गए, मेरे ट्यूशन क्लॉस के बच्चों के साथ एक तस्वीर थी। उसमें एकांत भी था, जब- जब वो तस्वीर देखती एकांत की सारी बातें यादें सामने आ जाती और मन कहता की जहां भी वो वो खुशी से रहे भगवान उसे सारी खुशियां दे।